जीते जी मिटकर दुनिया में, जो अमर पद पाते हैं
हम ऐसे भक्तो की याद में, मुक्ति पर्व मनाते हैं।

ज्ञान लिया सतगुरू से, और फिर ज्ञानी सा जीवन भी जिया
गुरू कृपा से मुक्त हुये खुद, औरों को भी मुक्त किया
रोते हुये तो आते हैं सब, हँसते हुये जो जाते हैं
हम ऐसे भक्तो.....

कभी भी गुरू केभक्तों को ना बांध सका मन का बंधन
सच्चे सेवक बन भक्तों का बीता भक्ति मे जीवन
मन के हाथों हारे ना जो जीत केबाजी जाते हैं
हम ऐसे भक्तो .....

जैसे सीप मे मोती रहता जैसे जल मे रहता कमल
भक्त भी रहते हैं दुनिया मे दुनिया से न्यारे हर पल
जग मे बसते हैं पर जग को मन मे जो न बसाते हैं
हम ऐसे.....

मान बडाई छल चतुराई से हरदम ही दूर रहे
सुख दुख से उठ के"जगत" मे नाम नशे मे चूर रहे
जिनको कुछ न चाहिये पर सब कुछ पाकेजाते हैं
हम ऐसे भक्तो .....

(तर्ज : क्या मिलीये .....)

(तर्ज: रामचन्द्र कह गये सिया से.....)